डिजिटल एग्रीकल्चर के साथ किसानों की बढ़ाएं आय

जागरण संवाददाता • लखनऊ : भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान किसानों को गन्ने की खेती कराकर आर्थिक रूप से समृद्ध बनाता आ रहा है। चीनी का उत्पादन बढ़ाने जैसे क्रांतिकारी कार्य इसी संस्थान की देन है। अब डिजिटल एग्रीकल्चर का दौर है, ऐसे में आधुनिक तकनीक का साथ लेकर उत्पाद बढ़ाकर लाभ कमा सकते हैं। ड्रोन का उपयोग हो रहा है, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस यानी एआइ का साथ लेने की जरूरत है।

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के 75वें स्थापना दिवस समारोह में सोमवार को सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा. कृष्ण कुमार सिंह ने कहा, पानी का कम से कम उपयोग करके दक्षता बढ़ाना समय की मांग है, इसके लिए डिवाइस बनाई जाए। भविष्य की चुनौतियों का सामना तभी किया जा सकता है, जब छोटे किसानों को ध्यान में रखकर अनुसंधान हों। गुड़ की इकाइयों में कार्बन उत्सर्जन में कमी लाई जाए, नई उन्नत किस्मों का तेजी से विकास करके मशीनीकरण को बढ़ावा दिया जाए। उन्होंने कहा, युवाओं को सशक्त बनाने के लिए स्टार्टअप को समर्थन होना चाहिए। इसके अलावा लघु स्तर की गन्ना कटाई मशीन का

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के स्थापना दिवस समारोह का शुभारंभ करते मुख्य अतिथि डा. कृष्ण कुमार सिंह, साथ में निदेशक डा. दिनेश सिंह और डा. टी दामोदरन • जागरण

विकास करने की लंबे समय से मांग हो रही है। दो टूक बोले, सिर्फ प्रौद्योगिकी का साथ ही इंपैक्ट एनालिसिस भी उतनी ही जरूरी होगी। अनुसंधान संस्थान के निदेशक डा. दिनेश सिंह ने कहा, पादप किस्म व गन्ने की दस प्रजातियों को 2025 में पंजीकृत कराया गया है। छह लाख पौध सीधे किसानों को आनलाइन भेजी गई। गन्ने का क्षेत्रफल 2025-26 में 1.72 लाख हेक्टेयर होगा। राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो के निदेशक डा. काजल चक्रवर्ती ने कहा, जैव एथेनाल व जैव प्लास्टिक के क्षेत्र में हरित प्रौद्योगिकी का विकास करने की जरूरत है। केंद्रीय उपोष्ण कटिबंधीय बागवानी संस्थान के निदेशक टी. दामोदरन ने कहा, किसानों के लिए उपयोगी और व्यावसायिक स्तर पर होने वाली किस्मों का विकास किया जाए। संस्थान के पूर्व विभागाध्यक्ष डा. एके श्रीवास्तव ने गन्ना भारतीय विरासत विषय पर कहा कि गन्ना उन छह फसलों में शामिल हैं, जिन्होंने मानव सभ्यता को गहराई से प्रभावित किया। वेद, पुराण, रामचरित मानव व महाभारत में भी इसका उल्लेख मिलता है। किसानों व संस्थान के कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। कर्मचारियों ने नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया। संचालन डा. अनीता सावनानी व आभार ज्ञापन डा. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने किया।

गन्ने की उन्नत किस्मों व हरित तकनीक से बदलेगी किसानों की तकदीर

• भाकृअनुप- भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान ने मनाया का 75वां स्थापना दिवस

भास्कर ब्यूरो

लखनऊ। भाकृअनुप-भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान (IISR), लखनऊ ने अपनी स्थापना के 75 गौरवशाली वर्ष पूरे होने पर समारोह का भव्य आयोजन किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो केके सिंह पूर्व कुलसचिव सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय मेरठ थे। साथ ही डॉ. काजल चक्रवर्ती निदेशक भाकृअनुप राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो लखनऊ तथा डॉ टी दामोदरन निदेशक भाकृअनुप केंद्रीय उपोष्ण कटिबंधीय बागवानी संस्थान लखनऊ विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

प्रो केके सिंह ने संस्थान द्वारा विकसित 50 से अधिक उच्च उत्पादक और जलवायु-सहिष्णु गन्ना किस्मों की सराहना करते हुए कहा कि प्रतिकूल

परिस्थितियों में भी ये किस्में किसानों की आय सुरक्षित कर रही हैं। संस्थान के निदेशक डॉ दिनेश सिंह ने भविष्य की उपलब्धियों का खाका पेश करते हुए बताया कि वर्ष 2024-25 के दौरान संस्थान ने रिकॉर्ड 10,150 क्विंटल बीज गन्ने का उत्पादन किया है जिसमें 'कोलक 14201' जैसी अत्यधिक मांग वाली किस्मों का वितरण प्रमुखता से किया गया।उन्होंने अनुमान जताया कि वर्ष 2025-26 तक इस किस्म का क्षेत्रफल बढ़कर 1.72 लाख हेक्टेयर हो जाएगा।

समारोह के दौरान विशिष्ट अतिथियों ने गन्ने को केवल चीनी तक सीमित न रखकर इसे जैव-एथेनॉल और जैव-प्लास्टिक जैसे 'ग्रीन-फ्यूल' के भविष्य के रूप में देखने पर जोर दिया।विशेषज्ञों ने जल संरक्षण के लिए 'सेंसर-आधारित सिंचाई प्रणाली'और गुड़ निर्माण इकाइयों से कार्बन उत्सर्जन कम करने जैसी आधुनिक तकनीकों की आवश्यकता जताई। कार्यक्रम में 'गन्ना भारतीय विरासत' विषय पर विशेष व्याख्यान के माध्यम से वेदों और रामायण काल से गन्ने के ऐतिहासिक महत्व को साझा किया गया। इस गौरवशाली अवसर पर तकनीकी बुलेटिन का विमोचन हुआ, प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया गया और संस्थान के कार्मिकों ने नुक्कड़ नाटक के माध्यम से जागरूकता का संदेश दिया।

संरक्षक सरोज, सतीश छोटा पकरिया रोड खदरा लखनऊ व्यापार मण्डल नियाजसाबिद विकास गुप्ता संगठन मंत्री शोएब प्रचार मंत्री हरिश्चन्द्र संरक्षक जहीर, तथा खदरा पार्षद के क्षेत्र में नया संगठन गठन कर शपथ ग्रहण कराया हाल पर शासन एवं प्रशासन सदैव उनके साथ खड़ा रहेगा। उन्होंने सभी नवनियुक्त

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान का 75 वा स्थापना दिवस मनाया गया

फोकस टाइम्स लखनऊ

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ का 75वां स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. के. के. सिंह, पूर्व कुलसचिव, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ थे। साथ ही डॉ. काजल चक्रवर्ती, निदेशक, भाकृअनुप राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, लखनऊ तथा डॉ. टी. दामोदरन, निदेशक, भाकृअनुप केंद्रीय उपोष्ण कटिबंधीय बागवानी संस्थान, लखनऊ विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। प्रो. के. के. सिंह ने संस्थान के उत्कृष्ट योगदान की सराहना की, विशेषकर 50 से अधिक उच्च उत्पादक, जलवायु–सहिष्णु एवं अधिक शर्करा युक्त गन्ना किस्मों के विकास के लिए, जो प्रतिकूल परिस्थितियों में भी बेहतर प्रदर्शन करती है। उन्होंने स्किप–फरो तकनीक, बड–चिप तकनीक, समेकित कीट प्रबंधन तथा गुड प्रसंस्करण इकाइयों के माध्यम से मूल्य संवर्धन में संस्थान की महत्वपूर्ण भूमिका पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने यह भी कहा कि भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए संस्थान को अपने प्रयास और तेज करने होंगे। इनमे गुड निर्माण इकाइयों से कार्बन उत्सर्जन में कमी लाना, नई एवं उन्नत किस्मों के विकास द्वारा किस्म प्रतिस्थापन की गति बढ़ाना, जल उपयोग को कम करने हेतु मानक संचालन प्रक्रियाएं (एसओपी) विकसित करना, गुणवत्तापूर्ण बीज की उपलब्धता सुनिश्चित करना, कीट एवं रोग प्रबंधन को सुदृढ़ करना, मृदा क्षरण की समस्या का समाधान, नाइट्रोजन उपयोग दक्षता में सुधार तथा सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी को दूर करना, उत्पादन लागत में कमी, मशीनीकरण को बढ़ावा, कस्टम हायरिंग केंद्रों को सशक्त बनाना, डिजिटल कृषि को प्रोत्साहन, सहयोगात्मक परियोजनाओं की शुरुआत, उद्यमिता विकास कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं को सशक्त बनाना, स्टार्ट–अप को समर्थन, जैव–एथेनॉल एवं जैव–प्लास्टिक के क्षेत्र में हरित प्रौद्योगिकी का विकास, प्रभावी अंतःफसली प्रणाली को बढ़ावा, तथा लघु स्तर की गन्ना कटाई मशीन की लंबे समय से

चली आ रही मांग को पूरा करना शामिल है। उन्होंने आगे कहा कि संस्थान को अपनी प्रौद्योगिकियों का व्यवस्थित प्रभाव विश्लेषण (इम्पैक्ट एनालिसिस) करना चाहिए, जिससे उनके प्रभाव और पहुंच का आकलन किया जा सके। भाकृअनुप भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. दिनेश सिंह ने बताया कि वर्ष 2025 के दौरान पादप किस्म एवं कृषक अधिकार प्राधिकरण (प्लूट–क्ट।) के साथ गन्ने की दस किस्में पंजीकृत की गई। साथ ही, (प्लूट) की किस्म पहचान समिति को गन्ना किस्म कोलक 19204 (इक्षु–18) (मध्य देर) के विकसित हेतु एक पहचान प्रस्ताव भेजा गया। उन्होंने बताया कि वर्ष 2024–25 के दौरान संस्थान ने 10,150 क्विंटल बीज गन्ना उत्पादन किया तथा गन्ना विकास परिषद के माध्यम से नई विमोचित किस्में (कोलक 16202 एवं कोलक 15466) की 21 लाख से अधिक एकल कलिकाएं उपलब्ध कराई। इसके अतिरिक्त लगभग 6 लाख कलिकाएं सीधे किसानों को ऑनलाइन प्रणाली के माध्यम से वितरित की गई। किस्म कोलक 14201 की अत्यधिक मांग देखी गई और उपलब्ध संपूर्ण बीज भंडार उत्तर प्रदेश में वितरित किया गया। अनुमान है कि वर्ष 2025–26 तक इसका क्षेत्रफल बढ़कर लगभग 1.72 लाख हेक्टेयर हो जाएगा। उन्होंने संस्थान में नई मशीनरी एवं उन्नत प्रौद्योगिकियों के विकास, पेटेंट एवं कॉपीराइट उपलब्धियों तथा गन्ना एवं चुकंदर अनुसंधान से जुड़े विभिन्न संगठनों के साथ सहयोग पर भी प्रकाश डाला। साथ ही संस्थान के आउटरीच कार्यक्रमों एवं ब्रीडर सीड उत्पादन गतिविधियों की जानकारी दी। विशिष्ट अतिथि डॉ. काजल चक्रवर्ती, निदेशक, निदेशक, भाकृअनुप राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, लखनऊ ने कहा कि गन्ना किसानों की आजीविका की आधारशिला है। उन्होंने संस्थान द्वारा गन्ना विकास में किए गए योगदान की प्रशंसा की तथा भविष्य में जैव–एथेनॉल एवं जैव–प्लास्टिक के क्षेत्र में अधिक कार्य कर संस्थान की दृश्यता और प्रभाव बढ़ाने पर बल दिया। विशिष्ट अतिथि डॉ. टी. दामोदरन, निदेशक, भाकृअनुप केंद्रीय उपोष्ण कटिबंधीय बागवानी संस्थान ने कहा कि भाकृअनुप भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान ने आवश्यकता पड़ने पर सदैव सहयोग प्रदान किया है। उन्होंने किसानों के लिए उपयोगी एवं व्यावसायिक स्तर पर अपनाई जा सकने वाली किस्मों के विकास पर निरंतर कार्य करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने जैव–एथेनॉल उत्पादन के क्षेत्र में और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता बताई। साथ ही यह भी कहा कि गन्ना अधिक जल–आवश्यकता वाली फसल है, अतः जल संरक्षण के लिए सेंसर–आधारित सिंचाई प्रणाली विकसित करना समय की आवश्यकता है। इस अवसर पर संस्थान के पूर्व विभागाध्यक्ष, पादप कार्यिकी एवं जैव रसायन विभाग डॉ. ए. के. श्रीवास्तव ने "गन्ना: भारतीय विरासत" विषय पर स्थापना दिवस व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि गन्ना उन छह फसलों में से एक है, जिन्होंने मानव सभ्यता को गहराई से प्रभावित किया है। उन्होंने बताया कि वेद, पुराण, चरक संहिता, रामायण और महाभारत जैसे प्राचीन भारतीय ग्रंथों में गन्ने का उल्लेख मिलता है, जो भारत में इसके सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व को दर्शाता है। कार्यक्रम के दौरान तकनीकी बुलेटिन एवं फोल्डर का विमोचन किया गया तथा संस्थान के कार्मिकों एवं प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया गया। संस्थान के कार्मिकों द्वारा एक नुक्कड़ नाटक भी किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अनीता सावनानी द्वारा किया गया तथा कार्यक्रम के संयोजक डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। (सुधीर शुक्ला) अध्यक्ष

'नई गन्ना प्रजातियों का विकास समय की मांग'

लखनऊ। मेरठ स्थित सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलसचिव प्रो. केके सिंह ने कहा कि नई, उच्च उत्पादक और अधिक शर्करायुक्त गन्ना प्रजातियों का निरंतर विकास समय की मांग है। गन्ने को चीनी व गुड़ तक ही सीमित न रखकर उससे अन्य उपयोगी उत्पादों का विस्तार किया जाए, ताकि किसानों की आय में स्थायी वृद्धि हो। सिंह तेलीबाग स्थित भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के 75वें स्थापना दिवस पर कार्यक्रम को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि गन्ना करोड़ों किसानों की आजीविका की आधारशिला है। उन्होंने गुण निर्माण इकाइयों से कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने, उत्पादन लागत घटाने तथा मशीनीकरण को बढ़ावा देने की जरूरत बताई। संस्थान के निदेशक डॉ. दिनेश सिंह ने बताया कि नई किस्में पंजीकृत की गईं हैं। बड़ी मात्रा में बीज गन्ना तथा एकल कलिकाएं किसानों को उपलब्ध कराई गईं। राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो के निदेशक डॉ. काजल चक्रवर्ती, केंद्रीय उपोष्ण कटिबंधीय बागवानी संस्थान के निदेशक डॉ. टी दामोदरन ने जल संरक्षण, उन्नत तकनीकों और जैव आधारित उत्पादों के विकास पर बल दिया। संस्थान के गन्ना वैज्ञानिक डॉ. श्रीनिवास, टेक्निकल स्टाफ से पल्लवी, डॉ. मुकेश कुमार, कीर्ति सिंह, मनोज कुमार पाठक को सम्मानित किया गया। शाहजहांपुर के प्रगतिशील किसान सरताज और लखीमपुर खीरी के दिलजिंदर सिंह सहेता को भी सम्मानित किया गया। (माई सिटी रिपोर्टर)

मिठास महोत्सव साल भर मनाए जाने का ऐलान

आईआईएसआर

लखनऊ, संवाददाता। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान (आईआईएसआर) का 75वां स्थापना दिवस सोमवार को उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर गन्ना अनुसंधान, नवाचार, किसान कल्याण में संस्थान की उपलब्धियों को बताया गया। वहीं प्रगतिशील किसान और कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। इसके साथ 75वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में वर्ष भर मिठास अमृत महोत्सव मनाये जाने का ऐलान हुआ।

मुख्य अतिथि मेरठ के सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलसचिव प्रो केके सिंह ने संस्थान द्वारा विकसित की गई 50 से अधिक उच्च उत्पादक, जलवायु-सहिष्णु व अधिक शर्करा युक्त गन्ना किस्मों की सराहना की।

आईआईएसआर के निदेशक डॉ. दिनेश सिंह ने बताया कि इस साल गन्ने की दस किस्में पंजीकृत की गई। नई विमोचित किस्में (कोलक 16202 व कोलक 15466) की 21 लाख से अधिक एकल कलिकाएं किसानों को उपलब्ध कराई गई हैं। इसके अतिरिक्त लगभग 6 लाख कलिकाएं सीधे किसानों को वितरित की गईं।

अधिक शर्करा युक्त गन्ना किस्मों को सराहा

■ **NBT रिपोर्ट, लखनऊः** भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में सोमवार को संस्थान का 75वां स्थापना दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलसचिव प्रो. केके सिंह रहे। मुख्य अतिथि ने संस्थान के विकसित उच्च उत्पादक, जलवायु-सहिष्ण और अधिक शर्करा युक्त गन्ना किस्मों की सराहना की। उन्होंने सलाह दी कि आज युवाओं को कृषि आधारित स्टार्ट-अप से जोड़ने की जरूरत है। संस्थान के निदेशक डॉ. दिनेश सिंह ने बताया कि वर्ष 2025 के दौरान पादप किस्म एवं कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण में गन्ने की दस नई किस्मों का पंजीकरण कराया गया।